2020-21

SARASWATI
The Research Journal

विशेषांक

साहित्य, सिनेमा और फिल्मांकन

SBES College of Arts and Commerce,
Aurangabad, Maharashtra

Special Issue (2) 2020-21, ISSN 2229 - 5224

अनुक्रम

अ.क्र.	शीर्षक	नाम	पृष्ठ
1.	संपादकीय		vi
2.	सिनेमा का बदलता स्वरूप	डॉ. संदीप कुमार	01
3.	सिनेमा में किन्नर विमर्श	डॉ. ललिता राठोड	15
4.	साहित्य के झरोंखे से सिनेमा दर्शन स्त्री केन्द्रित शोर्ट मूवीज़ के सन्दर्भ में	डॉ. रक्षा गीता	23
5.	विदेशी साहित्य पर आधारित हिंदी सिनेमा	डॉ. विनोदकुमार वायचळ 'वेदार्य'	37
6.	सिनेमा में चित्रित लिव इन रिलेशनशिप का समाज पर प्रभाव	डॉ. बालाजी जोकरे	45
7.	प्रेमचंद की सद्गति कहानी का फिल्मांकन	डॉ.अप्पासाहेब टाळके	51
8.	हिंदी सिनेमा और साहित्य : परम्परा की खोज	डॉ. जोतिमय बाग	58
9.	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. परमेश्वर काकडे	64
10.	साहित्य, सिनेमा और समाज	डॉ. नवनाथ काळे	71
11.	सिनेमा : सशक्त अभिव्यक्ति एवं प्रकार	डॉ. दत्तात्रय फुके	80
12.	रिश्ता : हिंदी साहित्य और सिनेमा का	डॉ. मीरा पी. आइ.	85
13.	साहित्य, सिनेमा तथा समाज	डॉ. विष्णु गव्हाणे	89
14.	'तीसरी कसम' की कथा का फिल्मांकन	डॉ. ओमप्रकाश झंवर	94
15.	हिंदी सिनेमा और प्रेमचंद	सोमनाथ वांजरवाडे	99
16.	साहित्य और सिनेमा का समाज पर प्रभाव	रमाकांत	106
17.	सूरज का सातवां घोडा उपन्यास का फिल्मांकन	डॉ. आसाराम बेवले	112

सिनेमा में किन्नर विमर्श

डॉ. ललिता राठोड
बीड, महाराष्ट्र

'किन्नर' अर्थात तीसरी दुनिया। जो सामाजिक उपेक्षा को आजीवन अपनी तालिओं के शोर में दबाकर अपने चेहरे को लाली और पाउडर के परतों में छिपाकर अपने अस्तित्व की पहचान की एक अपनी लड़ाई लड़ने के लिए प्रयास करते हैं। फिर भी, "सामाजिक व्यवस्था के अनुसार तीसरी दुनिया का होना बेमतलब है। ...किन्नर सामाजिक यथार्थ और सच्चाई है। यह पूराण से लेकर वर्तमान तक का सच है। अगर पुरुष पहली श्रेणी है, स्त्री दूसरी है तो इनको लिंग व्यवस्था में तीसरी श्रेणी का दर्जा प्राप्त होना ज़रूरी है। किन्नर अलग दुनिया का प्राणी नहीं बल्कि इसी समाज का अटूट हिस्सा है।"[1] समाज का यह तीसरा हिस्सा बहुत बड़ा तो नहीं परंतु अपना अस्तित्व स्थापित करने की कोशिश बरकरार रही है। जिन्हें सिनेमा के माध्यम से चित्रित किया जा रहा है, जिसको हम दक्षिण के फिल्मों में देख सकते हैं। 'कंचना' फिल्म का रिमेक जब 'लक्ष्मी बॉम्ब' बनी तब इस फिल्म की काफी चर्चा हुई, फिल्म के द्वारा इस तीसरी दुनिया के संवेदनाओं को लोगों के सामने रखा। जिसमें उनकी समस्याओं को नये ढंग और तेवर के चित्रित किया गया, जिससे दर्शक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

सिनेमा के इतिहास को सरसरी नज़र से देखेंगे तो पता चलता है कि आरंभिक फिल्मों में गौण रूप में स्थान दिया गया, सामाजिक रूढ़ियों से त्रस्त किन्नर को फिल्म में नज़र-अंदाज़ किया किया इसके साथ ही उन्हें केवल उपहासात्मक दृष्टि से देखा गया। वर्तमान समय में फिल्मों के साथ ही हिंदी साहित्य जगत में अनेक प्रकार की साहित्यिक रचनाओं के केंद्र में किन्नर दिखाई देने लगे हैं। साहित्य के साथ ही भारतीय फिल्मों में किन्नर की मानसिकता और जीवन संघर्ष का चित्रण होने लगा है, "किन्नर समाज सामाजिक व्यवस्था के लिए वर्जित होने के कारण फिल्म ने भी उनकी यथार्थ को अनदेखा किया। इक्कीसवीं सदी में साहित्य से अधिक